# कौन अपना, कौन पराया?

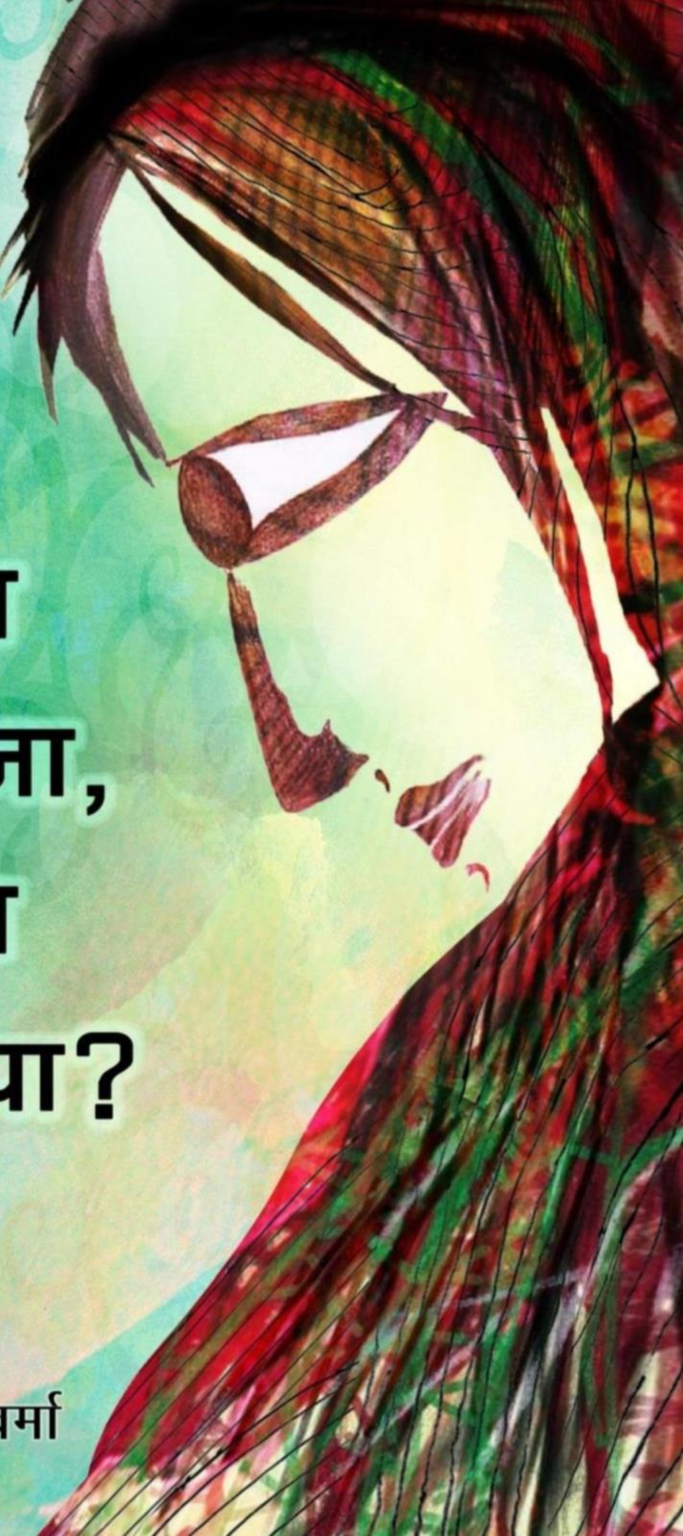

-अशोक वर्मा

कौन अपना, कौन पराया ?

Publishing-in-support-of,

# FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

**Website:** *www.fspmedia.in*

---

**© Copyright, Author**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

**ISBN:**

978-81-19927-83-8

**Price:** ₹ 250.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

# कौन अपना,
# कौन पराया?

## अशोक वर्मा

# लेखक के बारे में

''श्री अशोक वर्मा'' ने अगस्त 2015 में भारत की सर्वोपरि महारत्न कम्पनी "ऑइल एंड नेचुरल गॅस कार्पोरेशन" के निदेशक मण्डल से अवकाश प्राप्त किया। सन् 1977 में इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स, धनबाद से पेट्रोलियम इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करके इन्होंने ओ.एन.जी.सी. के असम के तेल क्षेत्रों से अपना व्यावसायिक जीवन प्रारम्भ किया और अपने 37 वर्ष के कार्यकाल में "ऑइल एंड नेचुरल गॅस कार्पोरेशन" के विभिन्न पदों पर, विभिन्न स्थानों में कार्य किया। असम, गुजरात और आंध्र प्रदेश के छोटे कस्बों में भी रहे और दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में भी। ओ.एन.जी.सी. विदेश में कार्य के दौरान उन्हें विश्व भर में भ्रमण करने का और विदेशों के तेल क्षेत्रों को देखने का अवसर भी प्राप्त हुआ। तीन वर्षों तक रूस के हिमाच्छादित 0 से 35 डिग्री नीचे तक के तापमान वाले साइबेरिया प्राँत में ये ओ.एन.जी.सी. विदेश की रूसी कम्पनी इम्पीरियल एनर्जी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी रहे।

साहित्य, विशेषतः हिन्दी साहित्य में इनकी सदा से रुचि रही है। रूस में अपने कार्यकाल में एक विभागीय पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया, जिसमें रूसी कर्मचारियों को हिन्दी के शब्द भी सिखाये जाते थे। आंध्र प्रदेश में भी इन्होंने विभागीय पत्रिका "अभ्युदय" का प्रकाशन प्रारम्भ करवाया, जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी और तेलुगू तीनों भाषाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती थी।

"कौन अपना कौन पराया" हिन्दी में इनका प्रथम उपन्यास है। इसके पूर्व अंग्रेजी में "एडनी आरेम" नाम से एक रोमांचक उपन्यास "पार्टरिज पब्लिकेशन" द्वारा प्रकाशित हो चुका है, जिसकी काफी सराहना हुई।

# पुस्तक के बारे में

"कौन अपना कौन पराया" एक छोटे से उपन्यास के माध्यम से समाज में फैली अनेकों बुराइयों, खास तौर पर महिलाओं के प्रति अत्याचार, पारिवारिक हिंसा, यौन शोषण, वैवाहिक और विश्वासी परिचितों द्वारा बलात्कार, बलात्कार के उपरांत उभरी समस्याएँ, जिन्हें बलात्कार पीड़ित स्त्री को स्वयं, अकेले ही झेलना पड़ता है। सरकारी दफ्तरों, विशेषतः उन संस्थाओं में जिन पर कानून–व्यवस्था बनाए रखने का उत्तरदायित्व है, में फैला भ्रष्टाचार स्वजनों द्वारा अपने वृद्ध माता–पिता को बेसहारा छोड़ देना, न सिर्फ छोड़ देना बल्कि उनकी मेहनत से कमाई संपत्ति पर जल्दी से जल्दी कब्जा जमा लेने की कोशिशें, सभी को उजागर करने का एक प्रयत्न है।

उपन्यास में वर्णित घटनाएँ शायद हम रोज ही अख़बारों में पढ़ते हैं। पति द्वारा अपनी पत्नी को सामूहिक बलात्कार के लिए बेच देना, बलात्कार पीड़ित स्त्री को गर्भपात के लिए इंकार कर दिया जाना, हर बात को राजनीतिक रंग देकर अपने व्यक्तिगत उद्देश्य साधना, गरीब मजदूर की दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर जोरदार विरोध प्रकट कर मुआवजा निकलवाना और मृतक के परिजनों को झांसा देकर वह मुआवजा स्वयं हजम कर लेना, शायद आज इतनी रोजमर्रा की बातें हो गईं हैं कि हम इनपर ध्यान भी नहीं देते।

एक ईमानदार, आदर्शों पर चलने वाला अवकाश प्राप्त उच्च सरकारी अधिकारी अपनी नौकरानी की परेशानियों को सुलझाने, उनकी मदद करने की चेष्टाओं में अपनी सारी पेंशन लुटाता रहता है और बदले में पाता है "समाज में बदनामी"। अपने आंतरिक नैतिक बल के कारण समाज के सामने वह झुकता नहीं, पर उसकी अपनी सन्तानें उसे ज्यों ही बीमार, असहाय अवस्था में पाती हैं, उसकी एकमात्र संपत्ति – उसका मकान – बेचकर उसे वृद्धाश्रम में छोड़ आने को उद्धृत हो जाती हैं।

ऐसी अनेक घटनाओं को एक सूत्र में पिरो कर एक मनोरंजक हृदय–बेधक उपन्यास की रचना की है एक नवोदित उपन्यासकार ने।

# प्राक्कथन

मेरी माँ के देहावसान के बाद, मेरे पिता जी ने गरीब, असहारा बच्चों और परिवारों की मदद का संकल्प लिया। अपने इरादों को उन्होंने एक पुस्तक, "दिव्यधाम" के रूप में प्रकाशित भी किया। जिसकी काफी प्रशंसा हुई और हिन्दी अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। ''दिव्यधाम'' को पूरी तरह से कार्यान्वित करना संभव नहीं हो पाया, तो उन्होंने एक छोटे रूप में, अपने घर के आसपास रह रहे गरीब परिवारों और बच्चों की सहायता करना शुरू कर दिया। उनकी मदद से कई गरीब बच्चे स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधियाँ लेकर जीवन पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। मोहल्ले के सभी बच्चे उन्हें "नाना जी" ही कहा करते हैं और बिलकुल घर के बच्चों की तरह रहते हैं। इन बच्चों की सहजता, सरलता देखकर आश्चर्य होता है और भय भी लगता है कि इनके सीधेपन का फायदा कोई भी उठा सकता है।

दूसरी तरफ किसी भी शहर का, किसी भी दिन का समाचार पत्र उठा लीजिये – भ्रष्टाचार की, महिलाओं के प्रति अत्याचार – अनाचार की – भरपूर ख़बरें मिलेंगी। अपने सगे माँ–बाप को लोग वृद्धावस्था में उनकी संपत्ति हड़पकर किस प्रकार से त्याग देते हैं, सुनकर विश्वास नहीं होता।

इस प्रकार, इस उपन्यास की कहानी में वर्णित सभी घटनाएँ, हम रोजमर्रा में समाचारपत्रों में पढ़ते रहते हैं। दूसरे शब्दों में, यह सत्य पर आधारित है। साथ ही सौभाग्यवश ऐसी कोई घटना पिता जी अथवा उनके किसी आत्मीय अथवा प्रिय बच्चों के साथ कभी नहीं घटी। इस दृष्टि से यह कहानी पूर्णतः काल्पनिक है। कहानी लिखते समय लेखक को काफी मानसिक द्वंद्व से गुज़रना पड़ा। अपने सगे संबंधियों और प्रियजनों को इस प्रकार के नकारात्मक रूप में पेश करना आपराधिक प्रतीत होता था, खासकर इसलिए कि अपने वास्तविक जीवन में वे इसके ठीक विपरीत हैं। परंतु समाज की बुराइयों को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा कार्य आत्मीयों

अथवा घनिष्ठों द्वारा ही किया जाना आवश्यक था। अपनी इस मजबूरी के लिए, उन सभी से, जिन्हें किसी न किसी रूप में कहानी में पात्र बनाया गया है, क्षमा प्रार्थी हूँ!

# *श्रद्धेय डैडी!*

आपके द्वारा किए जा रहे पुनीत कार्य के इर्द–गिर्द समाज में फैली अनेकों बुराइयों का ताना–बाना बुनकर यह कहानी बनाई है! साहित्यकार का बीज और अभियांत्रिकी की शिक्षा.... संलयन तो स्वाभाविक है! थोपी गयी घटनाएँ, आपके आत्मीयों का (स्वयं अपना भी!) चरित्र हनन..... कहानीकार की विवशता है। सदा की तरह इस बार भी घृष्टता के लिए क्षमा करेंगे!

***अशोक***

# 1

सुबह से ही घर में सरगर्मी सी छायी हुई थी। नाना जी वैसे तो हमेशा ही सुबह चार बजे उठ जाते हैं और उठ कर हल्का व्यायाम करके स्नान–ध्यान के बाद पिछले दिन का अख़बार पढ़ते हैं, तब तक परमेसुरी चाय–नाश्ता तैयार कर देती है। पर आज स्नान के पहले ही उन्होंने परमेसुरी को हाँक लगा दी – ''उठो भाई, आज बहुत काम है।''

करुणा कल रात बहुत देर तक मुँदी, पर जागी हुई आँखों से सपने देखती रही थी। कब उसकी आँख लगी, उसे पता नहीं, पर सोने के बाद उसने कोई सपना नहीं देखा।

सुबह भी नाना जी के उठने के साथ ही उसकी आँख भी खुल गयी थी। बिस्तर पर लेटे–लेटे वह नाना जी का व्यायाम करना देखती रही। नाना जी बिस्तर पर लेटे हुए ही हाथ पाँव घुमा–घुमा कर व्यायाम कर रहे थे। करुणा उठने को बेचैन हो रही थी, पर उसे यह भी लग रहा था कि शायद अभी बहुत जल्दी है। अभी तो बाहर चारों तरफ अंधेरा ही छाया हुआ है।

मौसी गहरी नींद में थी। इतनी जल्दी उसे उठाना ठीक नहीं होगा। पर नाना जी की आवाज सुनकर उसे नैतिक बल मिल गया। वह फौरन उठकर बैठ गयी। मौसी को धीरे से आवाज दी – ''माँ!''

''अभी तो बहुत जल्दी है बेटा, अभी कुछ देर और सो ले।'' – मौसी ने उनींदी आवाज में कहा।

"माँ, नाना जी कह रहे हैं, आज बहुत काम है।" अपने दिल की बात नाना जी के सहारे आराम से कही जा सकती थी!

परमेसुरी को काम का अंदाज करुणा से कहीं अधिक था, पर अभी वह करुणा की बेचैनी का आनंद उठाना चाहती थी।

"मैं तो एक घंटे बाद उठूँगी। तू भी सो ले थोड़ी देर।" – बंद आँखों को हल्का सा खोलकर, वह करुणा की प्रतिक्रिया देख रही थी। अंधेरे में उसका मुँह तो स्पष्ट नज़र नहीं आ रहा था, पर परमेसुरी को उसका भाव समझने के लिए अधिक रोशनी की जरूरत भी नहीं थी। उसकी कल्पना के अनुसार ही, करुणा की बेचैनी कुछ बढ़ती नज़र आयी। परमेसुरी सोने का नाटक करते हुए यों ही लेटी रही।

करुणा ने फिर पूछा – "अच्छा माँ, मैं तब तक दाल पीस दूँ? दही बड़े में जरूरत पड़ेगी ना!"

"बिना नहाये मेरे चौके में तो तू घुसना भी नहीं। समझी? अपने घर में चाहे जैसे भी म्लेच्छ तरीके से रहना।" मौसी ने पहले ही चेतावनी दे डाली।

पर यह करुणा के लिए हरी झंडी थी। वह खुश हो कर बोली – "अच्छा, तो फिर मैं जल्दी से नहा–धोकर आ जाती हूँ।"

बला की फुर्ती के साथ वह बिस्तर से उठ गयी। परमेसुरी को उसे छेड़ने का अच्छा सुअवसर मिल गया। "ऊँह! रोज तो धक्का मार–मार कर सात बजे भी उठने को तैयार नहीं होती, आज दूल्हे का स्वागत करने के लिए चार बजे से ही रसोई में घुसने को बेचैन है!" – परमेसुरी ने कहा।

पर करुणा को इतना सुनने की फुर्सत कहाँ थी? वह तो वॉश बेसिन पर पहुँच कर ब्रुश कर रही थी। नाना जी के बाथरूम से निकलते ही वह फौरन बाथरूम में घुस गयी और दो–तीन मिनटों में ही बाहर भी आ गयी। परमेसुरी ने फिर से एक फूलझड़ी छोड़ दी – "वाह! ऐसी फुर्ती रोज दिखाती, तो क्या बात थी!"

डॉली अभी सो ही रही थी। पंकज और सुरेश नाना जी के साथ ही सोते थे, वह भी सो रहे थे। इतनी जल्दी उन्हें उठने की जरूरत भी नहीं थी। करुणा जल्दी–जल्दी खाना बनाने की तैयारी में जुट गयी। मौसी ने आ कर कहा – "अरी बावली, तेरा दूल्हा आयेगा, तो क्या नाना जी को चाय भी नहीं मिलेगी? घर के लोग नाश्ता भी नहीं करेंगे? सिर्फ तेरे दूल्हे का खाना ही बनेगा क्या?"

करुणा शर्मा गयी, बोली – "नहीं माँ, अभी बनाने ही जा रही थी। मैंने सोचा, नाना जी को अभी समय लगेगा और पंकज, सुरेश और डॉली तो अभी सो ही रहे हैं।"

"पंकज को भी आज इंटरव्यू के लिए जाना है। उसे आठ बजे तक निकल जाना चाहिए। कब वापस आयेगा पता नहीं। इसलिए पूरा भरपेट खाकर जाए तभी अच्छा है।"

मौसी ने चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ा दिया और आलमारी में से बिस्किट निकाल कर प्लेट में सजाने लगी। "सुरेश को भी उठा दे, जल्दी से मटन ले आयेगा। बाद में अच्छा नहीं मिलता।" – मौसी ने कहा।

"मटन नहीं, माँ, उनको चिकन पसंद है।" – करुणा ने कहा।

"अच्छा, अभी से इतना पसंद–नापसंद का ख्याल है? मुझे क्या पसंद है, पता है?" – मौसी ने फिर चुटकी ली।

"माँ, ऐसा ना कहो, तुम्हारा मैं कितना ख्याल रखती हूँ।" – करुणा ने रुंवासे स्वर में कहा।

"मुझे पता है, मेरी लाड़ो! परमेसुरी ने आवाज में पूरा दुलार उड़ेलते हुए कहा – अपनी बेटी भी इतना खयाल नहीं रखती, जितना तू रखती है। जिस घर में जाएगी, उसे स्वर्ग बना देगी। राजेश बहुत किस्मत वाला है, तेरे जैसी लड़की उसे मिल रही है। एक उस मुँहजली को देख न, अब तक बिस्तर से हिलने का नाम नहीं। इतना काम पड़ा है, कभी एक बार रसोई की तरफ मुँह भी नहीं करती।"

"माँ, मेरी बेटी को कुछ न कहो। अभी बच्ची है। धीरे–धीरे सब सीख जाएगी।" करुणा, डॉली से सिर्फ सात

# कौन अपना, कौन पराया ?

''कौन अपना, कौन पराया?'' में वर्णित घटनाएँ रोज के अखबारों से ली गयी हैं। समाज में फैली अनेकों बुराइयों, सरकारी दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार, स्वजनों द्वारा अपने वृद्ध माता–पिता को बेसहारा छोड़ देना, उनकी मेहनत से कमाई संपत्ति पर कब्जा जमा लेने की कोशिशें, राजनीतिज्ञों का व्यक्तिगत उद्देश्य साधना, गरीब मजदूर की मृत्यु का मुआवजा उसके परिजनों को झांसा देकर स्वयं हजम कर लेना, महिलाओं के प्रति अत्याचार, पारिवारिक हिंसा, यौन–शोषण, वैवाहिक और विश्वासी परिचितों द्वारा बलात्कार, पति द्वारा अपनी पत्नी को बेच देना, बलात्कार के उपरांत उभरी समस्याएँ, जिन्हें पीड़िता को स्वयं, अकेले ही झेलना पड़ता है। गर्भपात के लिए इंकार कर दिया जाना, सामाजिक बहिष्कार आदि को उजागर करने का एक प्रयत्न है।

एक ईमानदार, आदर्शों पर चलने वाला अवकाश प्राप्त उच्च सरकारी अधिकारी अपनी नौकरानी की परेशानियों को सुलझाने, उनकी मदद करने की चेष्टाओं में अपनी सारी पेंशन लुटाता रहता है, और बदले में पाता है ''समाज से बदनामी।'' अपने आंतरिक नैतिक बल के कारण समाज के सामने वह झुकता नहीं, पर उसके अपने आत्मज उसे ज्यों ही बीमार, असहाय अवस्था में पाते हैं, उसकी एकमात्र संपत्ति, उसका मकान बेच कर उसे वृद्धाश्रम में छोड़ आने को उद्धत हो जाते हैं।

अनेक घटनाओं को एक सूत्र में पिरोकर एक मनोरंजक हृदय–भेदक उपन्यास की रचना की है एक नवोदित उपन्यासकार ने।

''श्री अशोक वर्मा'' ने अगस्त 2015 में भारत की सर्वोपरि महारत्न कम्पनी ''ऑइल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन'' के निर्देशक मण्डल से अवकाश प्राप्त किया। अपने 37 वर्ष के कार्यकाल में ''ऑइल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन'' के विभिन्न पदों पर, विभिन्न स्थानों में कार्य किया। असम और आंध्र–प्रदेश के छोटे कस्बों में भी रहे और दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में भी। ओ.एन.जी.सी. विदेश में कार्य के दौरान उन्हें विश्व भर में भ्रमण करने का, और विदेशों के तेल क्षेत्रों को देखने का अवसर भी प्राप्त हुआ। तीन वर्षो तक रूस के हिमाच्छादित शून्य से 35 डिग्री नीचे तक के तापमान वाले साइबेरिया प्रांत में ये ओ.एन.जी.सी. विदेश की रूसी कम्पनी इम्पीरियल एनर्जी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी रहे।

''कौन अपना कौन पराया'' हिन्दी में इनका प्रथम उपन्यास है। इसके पूर्व अंग्रेजी में ''एडनी आरेम'' नाम से एक थ्रिलर ''पार्टरिज पब्लिकेशन'' द्वारा प्रकाशित हो चुका है, जिसकी काफी सराहना हुई।

Also available as an eBook

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart Google Play amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-83-8

9 788119 927838